वर्ष-११ अंक-१
२७ सितम्बर २०१४

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14
एक प्रति- २०-०० रू.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-११ अंक-१

२७ सितम्बर २०१४
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०७१

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सम्पादक

मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३ ५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर) -४००रू.
आधा पृष्ठ (अंदर का) २५० रू.
चौथाई पृष्ठ १५० रु

अनुक्रमणिका

संपादकीय	2
महर्षि दयानन्द की जीवनी	7
आर्य भिक्षुजी और मुस्लिम बेटी	8
सुखी जीअवन का रहस्य	9
अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि...	13
एक पाती बापू के नाम	16
गाते–गुनगुनाते काम करना	19
समाचार	24
समाचार	26

सितम्बर माह के पर्व, त्यौहार, दिवस, जयंतियाँ

2	महात्मा गांधी जयंती
4	राष्ट्रीय अखण्डता दिवस
5	रानी दुर्गावती जयंती
8	बाल्मीकि जयंती
11	जयप्रकाश नारायण जयंती
21	धनवंतरी जयंती
23	महर्षि दयानंद निर्वाणोत्सव, दीपावली
24	संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस
26	गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती
31	सरदार पटेल जयंती, इंदिरा गांधी पुण्यतिथि

सम्पादकीय –

क्या आत्मा परमात्मा का अंश है, या क्या आत्मा परमात्मा है ?

पूर्व में इस विषय की चर्चा यहां की थी, अब विचार करें कि क्या परमात्मा और जीवात्मा के गुण हम समान है। यदि मनुष्य को परमात्मा का अंश माना जावे तो परमात्मा के ही सारे गुण उसमें आना चाहिये। मनुष्य स्वार्थी, लोभी, हिंसक, शोषक, मांसाहारी, भ्रष्टाचारी, व्यभिचारी, चोर, लुटेरा, हत्यारा, पापी आदी भी बन जाता है तो क्या यह सब परमात्मा में भी है? यदि परमात्मा का अंश होता तो वह न्यायकारी, सदाचारी, पुण्यात्मा, परोपकारी ही होता दुर्गुणों से मुक्त होता तो संसार का प्रत्येक मनुष्य भी ऐसा ही होता।

जो वस्तु एक ही है उसे अनेक नहीं माना जा सकता, देश की राजधानी देहली है, उसकी कल्पना अनेक नहीं हो सकती, हिमालय पर्वत देश में उत्तर में स्थित है, उसकी कल्पना दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में मानकर कई हिमालय नहीं हो सकते।

इसी प्रकार परमात्मा एक ही है, वह सबका पिता, पालक, रक्षक और सृष्टि का रचयिता है, वह न कभी जन्म लेता है और न कभी मरता है वह सदा से था और सदा रहेगा। इस जगत के निर्माण के पूर्व भी था, आज भी है और प्रलय हो जाने पर भी उसके अस्तित्व को कोई क्षति नहीं हो सकती, न उसमें कोई परिवर्तन हो सकता है।

सनातन धर्म की मान्यता के अनुसार तीन सत्ताएं अजर, अमर और अविनाशी हैं, इन्हें ही सनातन कहा गया, ये हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। यहां ध्यान देने योग्य बात है प्रकृति और जीवात्मा का अस्तित्व ईश्वर से पृथक है। इसमें भेद है, यदि यह भेद नहीं होता तो तीनों को अलग-अलग नहीं बताया जाता। हममें अज्ञानता के कारण ईश्वर के सत्य स्वरूप की जानकारी न होने के कारण उसे उसके सत्य स्वरूप के स्थान पर काल्पनिक स्वरूप मान लिया और महापुरूषों को भी ईश्वर मानने लगे।

किसी भी व्यक्ति, स्थान या वस्तु की पहचान उसके गुणों के आधार पर होती है, नमक में खारापन, मिर्च में तीखा पन और शकर में मिठास उसका गुण है। इन गुणों के कारण ही उनका अस्तित्व है यदि नमक में खारापन, मिर्च में तीखापन और शकर में मिठास नहीं तो इन्हें नमक, मिर्च और शकर नहीं माना जा सकता। इनके छोटे से छोटे अंश में, कण में भी यही सब गुण पाये जायेगें।

इसलिए ईश्वर को या यदि हम किसी अन्य ईश्वर को माने, ईश्वर का अंश माने तो उसमें कम से कम यह गुण होना चाहिए, तभी वह ईश्वर माना जा सकता है।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

इस्लाम प्रमुख ग्रंथ कुरान तथा इसाई मत की धर्म पुस्तिका बाईबिल में भी ईश्वर की लगभग ऐसी ही व्याख्या की है।

ईश्वर अजन्मा व अविनाशी है, निराकार है, यह संसार के एक-दो नहीं अनेक महापुरूषों से माना है, इसके सैकड़ों शास्त्रोक्त प्रमाण है। नानकदेवजी ने भी जो जन्म लेता है और मर जाता है, उसे ईश्वर मानने से मना किया लिखा।

एको सिमरो नानका, जो जल-थल रहा समाय।
दूजा कीहि सिमिरिये, जो जन्मे ते मर जाए।।

इस प्रकार उस परमपिता, जगतनियन्ता ईश्वर के स्थान पर उसका स्थान किसी अन्य को यदि देते हैं तो यह उसका अपमान है। जैसे देश का राष्ट्रपति एक है किन्तु अनेक व्यक्तियों को राष्ट्रपति कहने लगे तो, इस पद की गरिमा भंग हो जावेगी और अपमान होगा।

इसलिए जन्म लेने वाले, मृत्यु को प्राप्त होने वाले, काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष और सांसारिक भोग करने वालों को ईश्वर या उनका अंश मानना उस परमात्मा के अस्तित्व को क्षति पहुंचाना है।

ओ३म् जय जगदीश हरे की आरती में रोज तो गाते हैं **"तुम हो एक अगोचर, सबके प्राण पति"**

एक ईश्वर के संबंध में नानकजी पुनः कहते हैं - **"एक्योंमकार कर्ता निर्भो अकाल मूरत"**

कठोपनिषद में भी कहा - **"एको वशी सर्व भूतान्तरात्मा"**

और संसार के सर्वमान्य, सनातन ज्ञान वेद में भी कहा -

न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवश्देक एव।

- अथर्व. 13/4/16-18, 20

अर्थात वह एक ही 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 नहीं हो सकता, वह तो एक ही है।

इसीलिए सन्त कबीर को कहना पड़ा **"जो मन लागो एक सो, तो निरवारा जाय"**

एक से मन लगने पर ही उद्धार है, एक के स्थान पर अनेक से संबंध जोड़ने पर गहरी मित्रता व दृढ़ता संभव नहीं है।

इसलिए वह परमात्मा सर्वोच्च सभी आत्माओं का स्वामी है, उस जैसा या उसका अंश किसी को मानने योग्य नहीं है। योगीराज कृष्ण के उस सन्देश को ध्यान में रखें जिसमें उन्होंने ईश्वर को एक, व एक नाम का स्मरण का उपदेश अर्जुन को दिया, और कहा –

''ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन मामनु स्मरन।''

सत्य को ज्ञान की कसौटी पर परखकर स्वीकार कर लेना ही मनुष्यता का लक्षण है। जिस प्रकार संसार में बहुत से रिश्ते हमसे जुड़े होते हैं किसी भी मनुष्य के मामा, काका, ताऊ, गुरू, शिष्य व अनेक संबंधी हो सकते हैं किन्तु जनक पिता के रूप में किसी को याद किया जाएगा तो वह केवल एक ही हो सकता है। एक से अधिक नहीं। यदि किसी के पिता के नाम के स्थान पर अनेक नाम सामने आ जाये तो वह अशोभनीय और अव्यवहारिक होगा। ठीक उसी प्रकार जो हम सबका पालक है, रक्षक है, समस्त सृष्टि का जनक है, वह तो परमपिता एक ही हो सकता है जो सबका पिता है दूसरा नहीं।

ईश्वर एक अद्वितिय सत्ता है, इसलिए संसार का कोई भी शरीरधारी ईश्वर या उसका अंश नहीं हो सकता। हाँ वह ईश्वर की कृपा है, ईश्वर उसका स्वामी है, ईश्वर उसका आचार्य, राजा, न्यायाधीश, भाई, बन्धु, सखा के समान सहायक है। यही सन्देश हमारा सनातन धर्म और सनातनधर्मी ऋषियों ने हमें दिया।

इस संशय के कारण ईश्वर के सही स्वरूप को न मानने के कारण ही हमने ईश्वर से दूरी बना ली है और जो हृदय ईश्वर में सदा विद्यमान है इसे हम बाहर मान रहे हैं, जो निराकार है उसे शरीरधारी बना रहे हैं। ईश्वर का सानिध्य उसके सत्य स्वरूप को जानकर साधनों से नहीं साधना से प्राप्त करें।

– प्रकाश आर्य, मह

विचारिए ....

अण्डमान निकोबार की सेल्यूलर जेल के वे स्थल जहां शहीदों को फाँसी दी गई, वे सब आज यदि जापान में होते तो, उन लोगों के तीर्थ स्थल होते, परन्तु भारत में कहां सम्मान के भाव ! यदि हैं भी तो मात्र औपचारिक – वाणी तक सीमित !

महर्षि दयानन्द की जीवनी –

उस शिवरात्रि को रात में मूल में ही शंकर की भावना में उठे इस नये प्रश्न ने मानव के लिये जड़ता से हटकर चुतनता की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। शिव तो त्रिपुरारि, त्रिशूलधारी, महादेव होता है फिर अशक्त क्यों है ? वह अपने ऊपर चढ़े चूहों को भी नहीं भगा सकता ?

परन्तु उसने आश्चर्य से कहा कि पत्थर–पत्थर ही रहा, हिला डुला तक नहीं। फिर यह शिव कैसे ? इस प्रश्न से परेशान बालक ने वहां से घर चलकर विश्राम करने का निश्चय किया। वह दिन में शिव महात्म्य सुन चुका था, अतः उसने जो दृश्य देखा वह सब व्यर्थ सा प्रतीत होने लगा।

व्याकुल मूलशंकर ने पिता को जगाकर प्रश्न किया। परन्तु पिता के पास इन गहरे प्रश्नों का उत्तर कहां था ? तभी मूलशंकर घर चला आया। अपनी माँ से अपनी भूख की बात कही। माँ ने पुत्र को भोजन देकर बिस्तर पर सुला दिया, पर मन में विचार किया कि मैंने पहले ही कहा था कि उपवास का यह कष्ट बच्चे से सहा न जाएगा। पर मूलशंकर के मन में जो विचारों की क्रान्ति हो गई थी, उससे माँ बेखबर थी। खिला–पिलाकर माँ ने बच्चे से कहा कि अब अपने पिता के सामने मत पड़ना, अन्यथा वे नाराज होगें।

प्रातः जब उन्हें पता लगा कि पुत्र ने भोजन कर व्रत भंग कर लिया है। वे बोले, तो तूने महापाप किया है। अब शिवजी तुझ पर प्रसन्न नहीं होगें। उधर पिताजी अपने विश्वास पर अटल थे। इधर बालक। अपने विश्वास पर अटल था। जब पाषाण की मूर्ति वास्तविक शिव नहीं है तब उसकी पूजा तथा उसके निमित्त उपवास व्यर्थ है। प्रायश्चित्तादि करने के बाद बालक को विद्या ग्रहण करने में समर्थ बनाने के लिये ज्यातिष, व्याकरण छन्द निरूक्त आदि ज्ञान देने हेतु अलग से विद्वान पण्डित नियुक्त किये गए। मूलशंकर ने भी विद्या ग्रहण में अपना मन लगाया था और मूर्ति पूजा से आस्था हट गई।

बहन की मृत्यु –

लगभग 5 वर्ष के पश्चात मूलशंकर के जीवन में एक घटना और घटी जिसने उनके मन को पुनः हिलाकर रख दिया। इन्हें सूचना मिली कि तुम्हारी बहन की मृत्यु एक संघातक रोग से ग्रस्त होने से हो गई है। सारा परिवार शोक मग्न हो गया। इस घटना से मूलशंकर को अति मानसिक कष्ट पहुंचा। वह सोचने लगे कि क्या पृथ्वी पर सभी को एक–न–एक दिन मरना है ? मैं भी मरूंगा। क्या कोई ऐसा उपाय है कि मृत्यु मुख से मुक्ति मिल सके। सोचा, मैं मृत्यु क्लेश निवारण का उपाय प्राप्त करके ही रहूंगा। किसी को क्या पता था कि मूल के ह्रदय में क्या बीत रही है ? मूलशंकर अपने विचार में मग्न था कि कौन–सी औषधि मिले जिससे सारे दुःख दूर हो जायें।

क्रमशः..........

संस्मरण –

आर्य भिक्षुजी और मुस्लिम बेटी

मुस्लिम बेटी से स्वामीजी ने पूछा, बेटी तुम वेद ही क्यों पढ़ना चाहती हो। उस मुस्लिम बेटी ने जो जवाब दिया, वह उसकी साहसिकता का प्रमाण है।

वह बोली – कुरआन है, मुसलमानों का ! पुराण है – हिन्दुओं का ! बाईबिल है – ईसाईयों का, गुरूग्रंथ साहिब है – सरदार भाईयों का। भला मैं वेद क्यों न पढ़ूं ? मैंने सुना है, वेद सबका है, हर कोई पढ़ सकता है। स्वामीजी मैं तो वेद ही पढ़ूंगीं।

स्वामीजी ने मुस्लिम बेटी के साहस पर शाबाशी दी, आशीर्वाद दिया और कहा आज से ही नहीं, अभी से पढ़ो। धन्य है बिटिया।

महर्षि दयानन्द की अन्तर्भावना

1. सारे संसार में वेद प्रतिष्ठित हो परन्तु सर्वप्रथम भारत वर्ष में ''वेदों की ओर लौट चलो'' का उद्‌घोष, व्यवहार रूप में परिणित हो घर–घर वेदों का पठन–पाठन हो।

2. एक देवता के रूप में ईश्वर पूजित हो।

3. एक आर्य जाति संगठित हो।

4. एक भाषा–आर्य भाषा–हिन्दी जन–जन में जन मन में प्रचलित हो।

जरा सोचिए, विचारिए –

''ज्ञान, योग, भक्ति, धर्म''

किसी जिज्ञासु ने वैदिक विद्वान से पूछा कि कृपया बताइए, ज्ञान, योग, भक्ति और धर्म क्या है। सूत्रात्मक रूप में !

वैदिक विद्वान ने अत्यन्त संक्षेप में जिज्ञासु की जिज्ञासा को निम्नवत् रूप में शान्त किया।

सुनो ध्यान से वत्स – यदि आपकी बुद्धि ने ईश्वर को वास्तव में जाना है तो वह ज्ञान हो गया। यदि आपकी एकाग्रता ईश्वर के बारे में काम करती है तो वह योग हो गया। यदि आपका प्रेम ईश्वर के लिए होता है, सेवा की भावना प्राणी मात्र के प्रति होती है तो वह भक्ति हो गयी। सृष्टि नियम के अनुसार – आप अपना कार्य करते हैं, अपने दायित्व का निर्वाह सम्यक प्रकारेण करते हैं तो वह धर्म हो गया।

सुखी जीवन का रहस्य

प्रातःकाल की बेला में आचार्य अपने शिष्यों को सुखी जीवन का रहस्य पर उपदेश कर रहे थे। आचार्यजी के समझाने का ढंग औरों से अलग था वे प्रश्न और उत्तर के माध्यम से अपनी बातों की प्रस्तुति करते थे।

एक शिष्य ने पूछा जिन्दगी का रहस्य क्या है ? उत्तर दिया – अच्छा जीवन। वही जिन्दगी ठीक है जो सुख–सुविधा को प्राप्त कर जीवन बिताए, यही सुखी जीवन का रहस्य है। आचार्य ने कहा – अच्छे जीवन से क्या तात्पर्य है, जरा स्पष्ट करो।

शिष्य ने उत्तर दिया – गुरूजी, अच्छी जिन्दगी से मतलब जीवन में सुख सुविधा हो, धन का अभाव न हो, खाने–पीने, रहने पहनने आदि पर पर्याप्त खर्च किया जा सके, जिससे संसार का अधिक से अधिक भोग किया जा सके।

आचार्य – तुम्हारा आशय, खाना–पीना, रहना सुख व आनन्द का यही कारण है।

शिष्य – जी आचार्य जी।

आचार्य – तो फिर जिन लोगों के पास अपार धन है, सुख – सुविधा के साधन, जिनके पास विशाल इमारतें, खूबसूरत भवन है। वे संसार के भाग्यशाली व्यक्ति हैं, यही जीवन का रहस्य है।

शिष्य – जी आचार्य जी बिलकुल ठीक हैं।

आचार्य जी – अपने शिष्य को इस मिथ्या ज्ञान से हटकर उचित मार्ग दिखाना चाहते थे। इसलिए वे एक अत्यन्त धनवान व्यक्ति के पास ले गए, शिष्य जब उस भव्य इमारत में गया तो देखा भवन में बहुत कीमती साज–सज्जा के साधन हैं, कीमती कालीन बिछा है, नौकर हैं, घर के बाहर बाग हैं, वाहन खड़े हैं।

शिष्य अत्यन्त प्रसन्न था यह सोचकर कि गुरूजी उसके कथनों से संतुष्ट हैं और यहां आकर तो उसकी बात की और भी सार्थकता सिद्ध हो जावेगी।

आचार्य जी भवन के कई कक्षों में से गुजरते हुए एक कक्ष में गए जहां एक व्यक्ति चार पाई पर बीमार पड़ा था।

उसके हाथ–पैर काम नहीं करते, ठीक से बोलते नहीं बनता, अनेक प्रकार के रोगों ने घेर लिया था। दुःखों से त्रस्त होकर प्रभु से मौत की भीख मांग रहा थ, यह स्थिति उसकी कई दिनों से थी। पहले स्वस्थ शरीर की स्थिति में अपनी अपार सम्पत्ति का उपयोग असंयमित भोगों में, सुख विलास में की थी, भोगों ने यह हालत की है और अब धन–दौलत सब व्यर्थ थी, अपनी बीमारी पर बहुत कुछ लुटा चुका था, उसकी धन–सम्पत्ति किसी काम नहीं आ रही थी। अपनी सारी सम्पत्ति देकर भी स्वस्थ होने के उसने बहुत प्रयत्न किए किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अब जीवन में धन–सम्पत्ति का मोह व नशा हट गया, प्राण बचाने की चिन्ता शेष रह गई।

आचार्य जी अपने शिष्य को यह दृष्य बताकर दूसरे धनी व्यक्ति के घर ले गए। इस व्यक्ति का भवन तो पहले वाले से भी बड़ा आलीशान था। शिष्य को वहां

जहाँ एक वृद्ध व्यक्ति अकेला एक छोटे से कमरे सिर झुकाए बैठा था, उसके पास जो वस्तुएं रखी थीं उन्हें देखकर पता लगता था कि यह इस घर का सदस्य नहीं कोई बाहरी साधारण स्थिति वाला व्यक्ति है। किन्तु वही उस घर का स्वामी था, पता चला धन तो इसके पास था, उसका उपयोग इसने नहीं किया, न किसी अच्छो काम पर लगाया, धन बचा–बचाकर जोड़ता रहा। किन्तु अब उस पर कब्जा पुत्रों का है वृद्धावस्था में असहाय अशक्त होने पर उन्होंने सब जबरजस्ती प्राप्त कर लिया और अपने ऐशों आराम में प्रयोग कर रहे-हैं। शराब पीते हैं, जुआं खेलते हैं, इस व्यक्ति की दुर्दशा कर रखी है, नौकरों जैसा व्यवहार करते हैं।

आचार्य तीसरी जगह भी एक सम्पन्न व्यक्ति के घर ले गए वह भी एक बड़ा रहीस था पर कंजूसी के कारण न ठीक से खाता, न उसका धन किसी के काम आया था, परिवार में कोई सन्तान नहीं थी, पर पैसा जीवन भर संभालता रहा, वह असंतुष्ट था।

लालच के कारण बाहरी दुनिया से कटा हुआ था। समाज में कोई यश नहीं, उपेक्षित था, दुःखी जीवन बिता रहा था, उसके बाद धन का क्या होगा। इसी में उसका भूत, वर्तमान व भविष्य तीनों बेकार हो गए।

अब आचार्य जी शिष्य को साधारण, मध्यम आय वाले के घर ले गए। जाकर देखा परिवार के व्यक्ति स्वस्थ हैं, धार्मिक वातावरण घर का है, जीवन में संतुष्टि के लक्षण सब में हैं, सेवाभावी है, कुछ देर बात करने पर पता चला कि जीवन से संतुष्ट हैं, सुखी हैं, समाज में मान–सम्मान है। परमार्थ की भावना होने से परिवार में जब भी कोई संकट हुआ है तब समाज खड़ा हो गया और पूरा सहयोग दिया।

शिष्य धीरे–धीरे मन में चारों स्थानों की स्थिति पर विचार कर रहा था उसे अपनी बात पर सन्देह होने लगा अब उसका विश्वास जीवन के रहस्य धन, दौलत, सम्पत्ति है, डगमगा रहा था, शिष्य के अर्न्तद्वंद को समझते हुए।

आचार्य बोले – वत्स, धन–दौलत, सम्पत्ति बाहरी सुख–सुविधा प्रदान कर सकते हैं किन्तु एक समय और एक सीमा तक। समय और सीमा के पश्चात इनकी तुलना घर के कुड़े–कचरे के समना हो जाती है, जो सिर्फ फेंकने के काम का रह जाता है।

किन्तु धन सम्पत्ति को लक्ष्य पर पहुंचने का साधन मानकर जो इसका त्याग भाव से अपने लिए उपयोग करते हैं, दूसरों के लिए भी उपयोग करते हैं, उनका धन सार्थक होता है।

धन संग्रहित कर उसका सही उपयोग जो नहीं करते उन अभागों की स्थिति कोषागार (बैंक) के चौकीदार जैसी होती है जो धन की देखभाल सुरक्षा तो करता है पर उपयोग नहीं कर सकता।

सुखी जीवन का रहस्य है परमार्थ और त्याग भाव जो जीवन के इस रहस्य को समझ गया उन्हीं का जीवन सफल है अन्यथा तीनों धनाढ्य जो अपार

धन–सम्पत्ति के स्वामी तो थे पर धन किसी काम का नहीं जीवन अभिशाप बना हुआ था, धन की ऐसी स्थिति को "धन का नाश" कहते हैं। मानव जीवन का रहस्य आगामी जीवन को जिसे परलोक कहते हैं उसे भी सुधारना है और उसके लिए क्या जरूरी है सुनो –

धनानि भूमौ पशुवश्वः गोष्ठे।
नारि गृहद्वारी जनाः श्मशान।।
देहश्चितायाम् परलोक मार्गे।
धर्मानुगो गच्छति जीव एकः।।

अर्थात् – ये धन, ये पशु सब इसी भूमि पर छोड़ना पड़ेगा, जिसे अर्धांगिनी कहता है वह तेरी पत्नी भी तेरी बिदायी के समय तेरा साथ घर की देहरी तक देगी, तेरे मित्र, सगे–संबंधी तेरा साथ श्मशान तक दे देगें और तेरी देह तेरा साथ चिता तक दे देगी, इसके बाद तू अकेला रह जावेगा। इस अकेलेपन में तेरा साथी कौन? कभी सोचा तूने ?

सुन, आगे तेरा साथ तो तेरे शुभ कर्म, धर्माचरण से प्राप्त पूंजी ही देगी। वही परलोक के साथी हैं।

इसलिए वत्स जीवन का रहस्य भौतिक साधन नहीं, शुभ कर्म हैं जिनमें सत्याचरण, धैर्यता, क्षमाशीलता, दान, परोपकार की भावना, इन्द्रियों की शुचिता व नियन्त्रण है।

शिष्य – आचार्य जी धन्य हुआ, आपने मुझे भटके हुए को जीवन का सही मार्ग दिखा दिया।

इसलिए कहा – कंजूस का धन परछाई के समान है, जिसका लाभ उसे कभी नहीं हो सकता, जैसे परछाई पास होते हुए भी स्वयं के लिए निरर्थक होती है।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

वेदवाणी

स्वयं उन्नति के सोपान पर चढ़

— डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पूर्व कुलपति एवं संस्कृति विभागाध्यक्ष गुरूकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ऋषि प्रजापति। देवता आत्म। छन्द विराड् आर्षी अनुष्टुप्।

ओ३म् स्वयं बाजिंस्तन्वयं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व।।

महिमा तेऽन्येन न सन्निश।। — यजु. 23.15

(स्वयं) स्वयं (वाजिन्) हे बली आत्मन् ! तू (तन्वं कल्पयस्व) शरीर को समर्थ बना, (स्वयं यजस्व) स्वयं यज्ञ कर (स्वयं जुषस्व) स्वयं फल प्राप्त कर। (ते महिमा) तेरी महिमा अन्येन न सन्नशे) दूसरे के द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती।

हे मेरे आत्मन्। क्या तू इस बात की प्रतीक्षा कर रहा है कि कोई मुझे सोते से जगाने आयेगा, उठाने आयेगा, कर्मतत्पर करने आयेगा, सफलता दिलाने आयेगा। यदि ऐसा है, तो तू भूल में पड़ा है। तू अपनी शक्ति को पहचान। तू तो वाजी है, बलवान और वेगवान हैं। 'वाजी' का अर्थ संग्राम भी होता है। तू संग्रामवान भी है। रणउपस्थित होने पर तू उसमें वीरता दिखाने वाला है, आन्तरिक और बाह्य दोनों शत्रुओं से जुड़ाने वाला है। तुझे स्वयं जगाना होगा। क्या शेर को कोई जगाने जाता है। जाग, उठ, शत्रु से लोहा ले विजयी हो। स्वयं तू अपने शरीर को समर्थ बना, परिपुष्ट बना। यदि तू शरीर से निर्बल है, तो दूसरा कोई तेरे शरीर को बलवान बनाने नहीं आयेगा, तुझमें प्राण फूंकने नहीं आयेगा। स्वयं उत्साह दिखा, स्वयं पुरूषार्थ कर, स्वयं उद्यमी हो, स्वयं शरीर में बल का संचय कर। बल से ही पृथ्वी टिकी है, बल से ही अन्तरिक्ष टिका है, बल से द्युलोक टिका है, बल से पर्वत टिके हैं। बल से ही देव, मनुष्य, पशु, पक्षी, तृण, वनस्पति स्थित हैं। बल के सहारे ही हिंस जन्तु स्थित हैं। बड़े से लेकर कीट—पतंग, चींटी तक सब बल की दुहाई दे रहे हैं। बल से सारा लोक स्थित है।

शरीर को सामर्थ्यवान् बनाकर निकम्मा मत बैठा रह, न ही दूसरों का सताने में या सुधरी बात को बिगाड़ने में सामर्थ्य का उपयोग कर। शरीर को समर्थ बनकार यज्ञ में जुट जा, संगतिकरण का यज्ञ रचा, शुभ कार्य के लिए लोगों को संगठित कर। यह विभिन्न प्रकार का यज्ञ भी तुझे स्वयं ही करना होगा। स्वयं ही प्रारंभ किए यज्ञ को सफल कर।

याद रख, तू महान है महिमावान् है, शक्तिमान है, सबकुछ कर सकने में समर्थ है तेरी महिमा को कोई दूसरा प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रस्तोता — राजेन्द्र व्यास, उज्जैन

एक चिन्तन, आर्य समाज के नियम क्रमांक 8 पर

अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

— प्रकाश आर्य, महू

महर्षि दयानन्द का चिन्तन अति गहन, व्यापक, गंभीर, सूक्ष्म व सार्थक था। वे एक योगी और युगदृष्टा थे। इस विशेषता का कारण था परमात्मा का शाश्वत और कल्याणकारी ज्ञान वेद जो उनके जीवन का आधार बना।

इसलिए महर्षि का दृष्टिकोण संकुचित न होते हुए समस्त मानव जाति को सुखी करने का था। जिन कारणों से मानव समाज दुःखी रहता है और इस अमृतमय जीवन को अभिषप्त कर लेता है, उससे मुक्ति पाने की राह महर्षि ने दिखाई।

आर्य समाज के स्वर्णिम 10 नियम संसार के अनेक ग्रंथों तपस्वी मनीषियों की भावना का सार हैं। ये कल्याणकारी नियम समस्त मानव मात्र के लिए हितकर है, इनका कोई भी व्यक्ति विरोध नहीं कर सकता। प्रत्येक नियम में मानव कल्याण का अमृत भरा है। निष्पक्ष भाव से संसार का कोई भी व्यक्ति किसी भी जाति सम्प्रदाय व देश का अनुयायी है, इन नियमों को पढ़े तो वह इनका समर्थक ही बन सकता है विरोधी नहीं।

इन्हीं नियमों को आर्य समाज का आधार माना गया, ये प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति को आत्मसात करने के लिए निर्मित किए गए। प्रत्येक नियम अपने आप में एक महत्वपूर्ण जीवनोपयोगी सन्देश देता है।

संक्षेप में यहां आर्य समाज के नियम क्रमांक 8 के संबंध में विचार किया जा रहा है।

इस समस्त संसार में मनुष्य का ही नहीं प्राणीमात्र का प्रयास व इच्छा सुख को प्राप्त करने की है। कोई भी किसी भी योनि का जीव धारी दुःख नहीं चाहता। परमात्मा की अमृतमयी इस सृष्टि का उपयोग–उपभोग करते हुए जीवन उन्नत करना, आनन्द और परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना मानव जीवन द्वारा ही संभव है अन्य किसी योनी में यह संभव नहीं है। परन्तु संसार आज दुःखों, चिन्ताओं, परेशानियों के दल–दल में फंसते जा रहा है। यह क्यों ? इसका कारण क्या है ? यह कैसे दूर हो सकता है ? इन प्रश्नों का स्थायी निदान महर्षि ने उपरोक्त नियमों में हमें दे दिया।

एक कुशल चिकित्सक किसी व्याधि का ईलाज (उपचार) करते समय पहले उन कारणों को रोकता है जिनसे व्याधि बढ़ती है या जो उसका कारण बने हैं। फिर उस पीड़ित व्यक्ति को क्या दवा लेना बताता है। उसी प्रकार महर्षि ने क्लेश और परेशानियों की जननी अविद्या को पहले दूर करने का उसका नाश करने का मार्ग दिखाया। क्योंकि दुःखों का क्लेश का सबसे पहला कारण अविद्या को ही बताया गया है।

क्लेश के पांच कारण हैं – अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश पंच क्लेशाः। – योग दर्शन 2/3

अविद्या के कारण मनुष्य सत्य से भटक कर विपरीत पथ पर चलने लगता है, अविद्या के कारण संशय की स्थिति निर्मित हो जाती है। ज्ञान विहिन व्यक्ति की स्थिति गहन कोहरे में लुप्त पथ के समान होती है जिसे सामने रास्ता होने पर दिखाई नहीं देता। अज्ञान सत्य से दूर कर असत्य के समीप ले जाता है। अविद्या के संबंध में कहा गया –

अनित्याशुचि दुःखानात्मसु
नित्य शुचि सुखात्म ख्यातिरविद्या। "योग दर्शन 2/5"

मनुष्य अज्ञानता के कारण अनित्य को नित्य और नित्य को अनित्य, अशुद्ध को शुद्ध और शुद्ध को अशुद्ध मानता है, तथा सुख में दुःख की व दुःख के कारणों में सुख की अनुभूति करता है, यही अविद्या है।

इस स्थिति में भ्रम में मनुष्य उलझ जाता है। "संशय आत्मा को, बुद्धि को प्रभावित कर दुविधा में डाल देता है।" योगीराज कृष्णचन्द्र जी बताते हैं **"संशयात्माविनश्यति"** संशय से आत्मा का नाश होता है।

इस प्रकार अज्ञान युक्त किए गए कर्मों व विचारों का परिणाम विपरीत आता है, जो किए तो जाते हैं सुख के लिए, किन्तु प्राप्ति दुःखों की ही होती है।

दुःखों के कारणों में अज्ञान सबसे पहला कारण है। पुनः कहा गया **अज्ञान, अन्याय, अभाव, आलस्य** दुःख के कारण है।

इस प्रकार जीवन की सार्थकता व उसका उद्देश्य अज्ञान (अविद्या) को नष्ट करके ही पूर्ण हो सकता है।

"नियम का दूसरा भाग है विद्या की वृद्धि करना" विद्या ही मानव चोले की पहचान है, इसके बिना इस अनमोल सर्वोत्तम योनी प्राप्त करने का कोई विशेष लाभ नहीं। जीवन में कई प्रकार से कई बातों को अर्जित किया जाता है अर्जित पदार्थ ही पूंजी कहलाता है, एक सफल मनुष्य को जीवन में क्या–क्या अर्जित करना चाहिए, इस श्लोक में कुछ ऐसा दर्शाया है :–

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनं।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति।।

यहां पर भी जीवन में सबसे पहले विद्या को अर्जित करने का ही महत्व दर्शाया है। क्योंकि विद्या विहीन मनुष्य की गणना तो पशु के समान की गई है:– राजा भर्तृहरी नीति शतक में लिखते हैं,

"येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्य लोके भूवि भार भूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जिसके जीवन में विद्या, तप, दान की प्रवृत्ति गुण, धर्म नहीं वह पशुवत है। विद्या को प्रथम स्थान दिया।

विद्या नाधिगता कलंकरहिता.........।
कानोऽयं परपिण्डलोलुपतया काकैरिव प्रेर्यते।।

— भर्तहरि वैराग्य शतक श्लोक 43

जिसने दोष रहित पवित्र विद्या को प्राप्त नहीं किया, उसने पराया अन्न खाने के लालची कौवे के समान, मानव जीवन को व्यर्थ बरबाद कर दिया।

विद्या को कामधेनु कहा गया — कामधेनु की कल्पना का सन्दर्भ मनोवांछित प्राप्ति अर्थात सब कुछ प्राप्त होना जाना जाता है।

कोधो वैवस्तो राजा, तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या काम दुधः धेनू, संतोष नंदन वनम्।।

विद्या ही मनुष्य का हर स्थान का मित्र वह सहायक होती है —

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेशु च।
व्यांधिस्तस्यौधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च।।

विद्या से मानव जीवन में सबकुछ प्राप्त होता है, विद्या रूपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, यही मनुष्य की शोभा है, इसी से राज्य में मनुष्य का सम्मान होता है, इसी से सुख व यश प्राप्त है, यही विदेश में मित्र के बन्धू समान सहयोगी होती है। विद्या विहीन व्यक्ति पशु है —

विद्या नाम नरस्य रूप मधिकम् प्रच्छन्न — गुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।
विद्या बन्धुजनो विदेश गमने, विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्या विहीनः पशुः।

— नीति शतक श्लोक 19

इसलिए परमात्मा से गायत्री महामन्त्र में **धियो योनः प्रचोदयात्** मन्त्र से सत्य ज्ञान की प्रार्थना की जाती है। एक सफल जीवन जीने के लिए वेद में बताया गया —

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभय U सहः।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतंमश्नुते।।

यजुर्वेद 40/14

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है।

इस प्रकार महर्षि ने संसार को सुखी रहने का सूत्र आर्य समाज के 8 वें नियम में दिया, निश्चित ही वह विश्व के समस्त मानव कल्याण का एक श्रेष्ठतम सुगम पथ है।

एक पाती बापू के नाम

प्रिय बापू 2 अक्टूबर आ रहा है,
तुम्हारी याद दिला रहा है।
ये दिन कितना महान है,
आज करते तुम्हें प्रणाम है।।

गनीमत है, यह दिन सबको याद रहता है,
कम से कम आदमी तुम्हारी बात तो करता है।
वर्ना अब सभी बहुत व्यस्त हैं,
अतीत को, भूलने के अभ्यस्थ हैं।।

फिर तुम्हारे बिना भी काम चल रहा,
आजकल तो हर कोई गांधी बन रहा।

ये बात अलग है तुमने, तपस्या से नाम पाया।
पर किसी की तकदीर में, जनम से ही ये आया।।
हमारे भारतवासी बड़े भोले हैं और वंशों की परम्परा निभाते हैं।
इसी कमजोरी को, चतुर राजनेता भुनाते हैं।।

21वीं सदी में थोड़ा फरक भी आया है।
पुराने विचार छोड़ नये को अपनाया है।।

इसलिए अहिंसा का सिर्फ "अ" हटा दिया।
और सत्य के आगे उसे लगा दिया ।
सभी जगह इसी का बोलबाला है।
देश भक्त वही जो बाहूबल वाला है।।

आप चरखे और सच का उपदेश करते रहे।
झूठ बोलने से यूं ही जिन्दगीभर डरते रहे।।

पर अब तो, झूठ बोलना शुरू शपथ विधि से ही करते हैं।
निज स्वार्थ को आगे, और राष्ट्र को पीछे धरते हैं।।

अब पार्टी का मतलब खुद को, परिवार को आगे बढ़ाने का।
दो नम्बर से, कमाई के साधन बढ़ाने का।।
बाहरी दुश्मन तो यहां से टल गए।
पर बापू, आस्तीन में सांप पल गए।।

काण्ड पर काण्ड बनाने में,
हमारे राष्ट्रधार लगे हैं,
अब तो देशद्रोही, असमाजिक भी,
राजनीति के सगे है।

भक्षक ही रक्षक बने, और देश संभाल रहे।
कोतवाल चोर का सगा, फरियाद कहां करे।।

तुम्हारी लाठी को सबने ऐसे जाना है।
जिसकी लाठी उसकी भेंस का मन्त्र माना है।।
शराब बन्दी का भाषण, हर चौराहे पर नेता देता है।
पर भाषण के पहले नेता, खुद थोड़ी पी लेता है।
तुम्हारी प्रतिमा साल में एकबार धुल पाती है।
वर्ना पूरे साल सडक की धूल खाती है।।
मत आना बापू, इस बदनाम बस्ती में,
नर्क से बद्त्तर हो रही, ये मेरी दृष्टि में।

तुम चाहते थे रामराज, पर रावणों की यहां है भरमार।
सुधरने के नहीं जिनके कोई है आसार।
फिर भी आवोगे तो, पछताओगें,
गुटबाजी में व्यर्थ उलझ जाओगें।।

गुटबाजी की होड़ तगड़ी है,
गुण्ड़ों के पैर में नेता की पगड़ी है।।

सारे बगुला भगतों का, बन गया ये धाम,
उनकी बगल में छूरी, और मुख में है राम।

इसलिए थोड़ी जानकारी लिख पत्र भेंज रहा आपके नाम
दुष्टों ने तोड़ा सपना तुम्हारा, और कलंकित कर दिया नाम।
क्या सुनाउं, कितना सुनाउं बस, कलम को देता हूं विराम।।
दुःखी मत होना बापू, स्वीकार करें मेरा प्रणाम।

– **प्रकाश आर्य, महू**

अनमोल वचन

1. सन्तोष ही सबसे बड़ा सुख है।

2. जो किसी का बुरा नहीं चाहता और सबको सम–दृष्टि से देखता है, उसे हर ओर से सुख ही सुख प्राप्त होता है।

3. सुखी वह है, जिसकी वासनाएं छूट गई हैं।

4. आचरण–रहित विचार कितने ही अच्छे क्यों न हों, उन्हें खोटे मोती की तरह त्याग देना चाहिए।

5. प्रार्थना केवल मुंह से बोलने से ही नहीं होती। निःस्वार्थ सेवा भी अमूल्य प्रार्थना है।

6. दरिद्र वह है, जिसमें शुद्ध प्रेम की एक बूंद तक नहीं है।

7. ह्दय को सर्वथा शुद्ध–पवित्र बनाना ही सच्चा सन्यास है।

8. जो रिश्वत लेता है, वह अपने और अपने देश के साथ विश्वासघात करता है।

9. विद्या सबसे बड़ा धन है।

10. मृत्यु से कोई नहीं बच सकता। फिर आत्मा के विरूद्ध कर्म करके जीने से क्या लाभ ?

गाते–गुनगुनाते काम करना

– स्वेट मार्डन

हमें कार्यालय के साथ सहमत होकर कहना पड़ता है – "हमें ऐसा आदमी, ऐसा कार्यकर्ता दो जो अपने काम में मग्न होकर गाता–गुनगुनाता हो।" ऐसा आदमी दफ्तर के समय में दूसरों से अधिक काम करेगा, वह दूसरों की अपेक्षा बेहतर काम करेगा, वह दूर तक प्रयत्नशील और धैर्यवान् रहेगा।

जब कोई मनुष्य काम करते–करते संगीत की ओर बढ़ता है। तब वह थकावट का अनुभव कभी नहीं करता। सितारे जब अपने–अपने चक्र पर घूमते हैं, तो उसमें संगीत होने लगता है। प्रसन्न हृदयता से वह शक्ति प्राप्त होती है, जो आश्चर्यजनक कार्य शक्ति दिखाती है। इसकी सहनशक्ति तो गिनती और नाप–तौल के बाद की वस्तु है। आप प्रयत्न कीजिए, ऐसे प्रयत्न जो स्थायी रूप से लाभकारी हों और सब एक समान आनन्दपूर्ण चित्त से किये गये हों, प्रसन्नचित्तता, हंसी, सुन्दरता और प्रकाश, ये उत्तम कार्यकर्ता के सर्वोत्तम गुण हैं।

एक अन्य लेखक का कथन है कि जब भांप उगलती पतीली के साथ लड़कियों के मधुर गीत–स्वर कानों में सुनाई दें, या झाडू किसी स्वर ताल के साथ चलने लगी हो, तो समझो कि पतीली में जो कुछ पकेगा वह अत्यन्त स्वादिष्ट होगा और वह झाडू जिस स्थान फिरेगी, वह स्थान साफ होकर चमचमा उठेगा। लड़कियां जब अपना काम करते–करते गाने लगती हैं तब उनका दिल मुस्करा उठता है। उस समय मां का चेहरा भी उस गीत के साज को सुनकर खिल उठता है। भाई और बहिनें यद्यपि इसका अर्थ नहीं समझ पाते, परन्तु प्रसन्नता से काम की आदत तो अनजाने ही उसमें भी आ ही जाती है।

स्विट्ज़रलैंड में ऐसे दूध दुहने वाले हैं, जो दुहने के साथ–साथ गाते भी हैं। वहां ग्वाले या ग्वालिन को अच्छा गला और स्वर होने से अधिक मजदूरी मिलती है, क्योंकि उनके गीत के प्रभाव से गाएं आदि दूध देती हैं। बफ्फन का कथन है कि संगीत के मधुर शब्द से मन की भी पुष्टि होती है। गडरिये जब गाते होते हैं, तो उनका श्रम ही साज हो जाता है।

इंग्लैंड के एक ग्रामीण जिले में रहने वाली श्रीमती होलन संगीतमय घंटिया के विषय में बताती हैं – "यद्यपि उनसे स्वर–स्वर के साथ संगीत नहीं निकलता, परन्तु उनसे मधुर झंकार उनकी होती है, जो कोमल है। वह सूर्य की तरह चमकती धूप, हवा और पक्षियों के मधुर कलरव से मिलकर और भी मधुर हो जाती है।"

अंगेला ने लंदन में हर तरह का संगीत सुना था, परन्तु यहां का यह संगीत विचित्र प्रकार का था। वह इतना कोमल, मधुर और चित्त को प्रसन्न करने वाला था कि जिसकी कुछ सीमा नहीं। ये घंटियां ठुनक–ठुनककर इस प्रकार मधुर शब्द करती थीं मानो जल के प्रवाह का अर्थ समझते थे। यही संगीत इस बात का द्योतक था कि घोड़ों की एक मण्डली खेतों पर से होकर मक्की के बोरे लादे, पिसवाने के

लिए मिल की तरफ जा रही है। हर-एक घोड़े के साज के साथ छोटी-छोटी घंटियों की एक लड़ी बंधी हुई थी। घोड़े बड़े सुन्दर थे। उनकी अच्छे से देखभाल की गई थी। जब वे कदम आगे रखते तो अपना सिर झुकाते थे और हरएक कदम के साथ घंटियों का आनन्दमय मधुर शब्द उठता था। अंगेला ने पूछा – क्या यहां सब घोड़ों के घंटियां होती हैं ? उसके दादा ने उत्तर दिया – नहीं, उन पर कुछ खर्च आता है। परन्तु यदि हरएक घोड़े की घंटियां बांधकर तनिक संगीत प्रदान करें, तो इससे उनका परिश्रम आसान हो जाता है, क्योंकि उन्हें स्वयं भी यह स्वर संगीत पसन्द है। इस प्रकार घोड़ा अपने काम से कम थकता है और यह घंटियों का खर्च हमारी बड़ी भारी बचत करता है। घोड़ा उदार एवं ऊंची भावनाओं वाला पशु है। यह बुद्धि से भी रहित नहीं है। इसमें संगीत से आनन्द ग्रहरण करने की शक्ति होती है।

यदि हमें स्वयं गाना नहीं आता तो भी यदि हममें संगीत भावना है, तो हमारे लिए निरन्तर आनन्द का स्त्रोत है।

बीचर का कहना है कि कुछ लोग जीवनपथ पर इस प्रकार चलते हैं जैसे गली में बैंड या बाजा बजता जा रहा हो और हर ओर हवा में संगीत का फव्वारा छूट रहा हो। दूर और निकट के लोगों में जो कोई उसे सुनता है, वह आनन्द से भर जाता है। परन्तु कुछ अन्य लोग ऐसे होते हैं, जो हवा में कर्ण-कटु आवाज व अपने व्यवहार से जहां भी जाते है, दूसरों को डराते हैं। दूसरी ओर कुछ लोग जहां कहीं होते हैं, अपने व्यक्ति की मधुरता से वातावरण को उसी तरह भर देते हैं जैसे अक्टूबर मास में फलों के उद्यान पके फलों की सुगन्ध से वायु को सुरभित किया करते हैं।

मेसीलन का कहना है – हंसी शरीर के लिए उसी प्रकार लाभप्रद है जैसे धूप वनस्पतियों और शाक-सब्जियों के लिए।

स्वर्गीय चार्ल्स ए. डाना अपने काम में इतना आनन्द अनुभव करते थे कि वह अन्तिम रोग-शैयया तक प्रतिदिन अपने काम पर बराबर पहुंचते रहे। मन्त्रिमंडल के अधिकारी ने एक बार उनको कहा – मुझे समझ नहीं आता कि तुम इस चक्की में प्रतिदिन कैसे पिसते हो ?

चक्की ! मि. डाना ने जवाब दिया – यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है। मुझे तो इसमें आनन्द आता है। उन्हें हंसोड़ कहा जाता था। उनसे मिलकर इतना आनन्द आता था मानो क्यूबा या मेक्सिको की यात्रा कर ली हो या शीत ऋतु में सूर्य की खुली धूप के दर्शन कर लिये हों।

नाथनं का कहना है कि "मेरे पड़ोसियों में एक बड़ा चिड़चिड़ा स्वभाव का मनुष्य है। उसने मुझे तंग करने के लिए मेरे सैर के रास्ते में बत्तखों का बाड़ा बना डाला है। जब मैं घूमने जाता हूं तो सबसे पहले मेरे कानों में बतखों की टैं-टैं पड़ती हैं। परन्तु मेरा उससे कुछ भी नहीं बिगड़ता क्योंकि मैं प्रसन्नचित्त मनुष्य हूं। मैं सदैव बतखों की कैं-कैं सुनकर हंस पड़ता हूं।

कमशः ....

बाल सन्देश स्तंभ

घर आकर भी बच्चों की उस, परमात्मा जो 'सर्वशक्तिमान' है उसके बारे में जानने की उत्सुकता कम नहीं हुई—

दूसरे दिन सुबह—
बच्चों! आज तुम भी मेरे साथ उस सर्वशक्तिमान परमात्मा की प्रार्थना करो।
ओम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितवरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।
ओम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितवरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।
इस प्रकार बच्चे रोज दादाजी के साथ बैठकर उस परमात्मा, भगवान की प्रार्थना-संध्या करने लगे।
एक दिन अपूर्वा ने दादाजी से इस 'गायत्री महामन्त्र' का अर्थ पूछा—
दादाजी इस 'गायत्री मन्त्र' का अर्थ समझाईये।
अपूर्वा! इस 'गायत्री मन्त्र' द्वारा परमात्मा की प्रार्थना व गुणगान किया गया है ध्यान से सुनो।
हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और सर्वव्यापक, आनन्द के देने वाले प्रभो! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं, हम आपके उस पूजनीयतम्, पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी हमारी प्रार्थना है।
बच्चों! अब जब भी मुंबई आवोगे ईश्वर के बारे में और भी बतायेंगे।
बाद में अवकास समाप्त होने पर बच्चे जब मुंबई से दिल्ली अपने घर वापिस पहुंचे वहाँ भी उस परमात्माए भगवान की प्रार्थना-संध्या करने का नित्य क्रम जारी रखा।
समाप्त

समाचार

सार्वदेशिक सभा एवं जम्मु आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जम्मु–कश्मीर राहत कार्य में सहयोग

जम्मु–कश्मीर प्रभावित क्षेत्र का दौरा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, जम्मु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भारतभूषण आर्य, मन्त्री श्री राकेश चौहान, कोषाध्यक्ष श्री राधेश्याम जी एवं समाज के अन्य पदाधिकारियों द्वारा जम्मु से डेढ सौ किमी के क्षेत्र में आर्य समाज का प्रतिनिधि मण्डल दुर्घटना स्थल पर पहुंचा। वहां के प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा की पीड़ित परिवारों से भेंट की और वहां उनकी आवश्यकता की सामग्री को परिवारों में वितरित किया। उक्त क्षेत्र में पहाड़ के स्खलन से ग्राम पंजर में लगभग 50 से 55 मकान पहाड़ी के नीचे आकर पूर्ण रूप से नष्ट हो गये और कई मकान जीर्ण–क्षीर्ण होकर रहने योग्य नहीं रह गये हैं। अनेक व्यक्तियों का इस आपदा में देहान्त हो गया। अलग–अलग स्थानों पर राहत कैम्प लगे हैं व अनेक व्यक्ति भय के मारे और उत्पन्न समस्या के कारण स्थान छोड़कर पहाड़ियों पर रह रहे हैं। पंजर, कोटीलहट, पचरी, कीमची आदि स्थानों पर सहयोग दिया।

कश्मीर श्रीनगर की स्थिति अभी भी स्पष्ट नहीं है कई क्षेत्र में पानी है जिसे सामान्य होने में समय लगेगा, दो दिन पूर्व ही वहां आने–जाने का मार्ग चालू किया है।

इस बाढ़ के कारण श्रीनगर और कश्मीर के लगभग 4 आर्य समाज भी प्रभावित हुए हैं, उनमें भी पानी भर चुका था। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से अनाथ व असहाय व्यक्तियों, बालकों को स्थायी आश्रय देने की घोषणा की है। आर्य जनता से इस हेतु सहयोग की अपील की है। सहयोग राशि समाजें अपनी प्रान्तीय सभा के माध्यम से सार्वदेशिक सभा पहुंचा सकते हैं। ताकि पीड़ितों की यथायोग्य सहायता कर सकें।

आर्य समाज महावीर नगर, भोपाल के निर्वाचन सम्पन्न हुए

आर्य समाज महावीर नगर, भोपाल के निर्वाचन आर्य समाज के सदस्यों द्वारा नियमानुसार सौहार्दतापूर्ण वातावरण में एक पद के अतिरिक्त सभी पदों पर सर्वानुमति से सम्पन्न हुए।

दिनांक 7/9/2014 रविवार को म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार श्री भगवानदास अग्रवाल, श्री अतुल वर्मा एवं श्री रमेशचन्द्रजी गोयल की उपस्थिति में उक्त निर्वाचन सम्पन्न हुए।

निर्वाचित कार्यकारिणी में श्री कन्हैयालाल कामदार प्रधान, श्री ईश्वरराव मन्त्री, श्री राधेश्याम सक्सेना कोषाध्यक्ष, उपप्रधान श्रीमती तपेश्वरी शर्मा एवं सुदर्शन गांधी, वरिष्ठ उपमन्त्री रजनीश पंवार, श्री गिरीराज शर्मा उपमन्त्री, पुस्तकाध्यक्ष श्री चन्द्रदास शुक्ल, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री समीर कामदार एवं अन्तरंग सदस्य श्रीमती मुक्ता सहगल एवं राज मल्होत्रा एवं प्रान्तीय प्रतिनिधि श्री महेश शर्मा चुने गए।

सभी सदस्यों ने आपसी मतभेद दूर कर संगठित होकर आर्य समाज के कार्य को प्रगति देने का संकल्प लिया। सभा की ओर से निर्वाचित अधिकारियों व सहयोगियों को बधाई।

आर्य कन्या उच्च. विद्या. को मिला सर्वश्रेष्ठ स्कूल अवार्ड

मुख्यमन्त्री के हाथों शिक्षक दिवस पर मिला सम्मान

आसनसोल : आर्य समाज द्वारा संचालित आसनसोल स्थित आर्य कन्या हाईस्कूल को राज्य सरकार ने वर्द्धमान जिला का सर्वश्रेष्ठ हाईस्कूल घोषित किया है। शुकवार की शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर कोलकता में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के हाथों स्कूल की प्रिंसीपल उमा पांडेय और हेड क्लर्क हरिदास मुखर्जी ने अवार्ड ग्रहण किया। शनिबार को आर्य समाज के सचिव जगदीश केड़िया ने स्कूल परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में उक्त जानकारी दी।

इस अवसर पर प्रिंसीपल उमा पांडेय, शिक्षक प्रभारी उर्मिला ठाकुर, डीएवी स्कूल के शिक्षक प्रभारी उपेंद्र कुमार सिंह भी उपस्थित थे।

जगदीश केड़िया ने बताया कि मुख्यमन्त्री के हाथों सर्टिफिकेट, मोमेन्टो और 25 हजार रूपये का चैक प्रदान किया गया। उन्होंने बताया कि स्कूल की आधारभूत संरचना, प्रबंधन, अनुशासन और पठन–पाठन के आधार पर उक्त पुरस्कार प्रदान किया गया। वहीं आर्य कन्या उच्च विद्यालय को जिला का सर्वश्रेष्ठ हाईस्कूल घोषित होने से स्कूल के सभी शिक्षक व कर्मी तथा छात्राओं में हर्ष व्याप्त हैं।

आर्य समाज महर्षि दयानन्दगंज इन्दौर द्वारा प्रचार कार्य में महत्वपूर्ण योगदान

आर्य समाज महर्षि दयानन्दगंज इन्दौर की तदर्थ समिति ने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में एक प्रसंशनीय सहयोग प्रदान किया है। तदर्थ समिति ने अपनी बैठक में प्रस्ताव कर म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी से अनुमति प्राप्त की, एक वाहन कय करने की सभा प्रधान जी की अनुमति प्राप्त होने पर एक चार पहिया वाहन मारूति ईको कय की है। इसका उपयोग इन्दौर संभाग के ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार–प्रसार करने तथा प्रान्तीय सभा के संभागीय उपप्रधान–उपमन्त्री और निरीक्षण समिति तथा आर्य वीर दल के कार्य में भी इसका उपयौग किया जावेगा। वाहन में कुछ आवश्यक सामग्री व साहित्य भी उपलब्ध रहेगा, जो समाजों तक आसानी से पहुंचाया जा सकेगा। इस प्रसंशनीय कार्य हेतु समिति के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

आर्य समाज गरोठ में तदर्थ समिति का मनोनयन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयानुसार श्री भगवानदास जी अग्रवाल संयोजक विवाद निवारण समिति द्वारा आर्य समाज गरोठ तदर्थ समिति का मनोनयन किया गया। समिति में डॉ. नरेन्द्रसिंह चौहान संयोजक, श्री खुशहालचन्द आर्य सहसंयोजक, श्री चेतन आर्य सहसंयोजक, श्री महेश प्रसाद सदस्य, श्री राधेश्याम माली सदस्य मनोनीत किए गए।

सूचना

0 मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल की अन्तरंग बैठक दिनांक 5 अक्टूबर 2014 रविवार को प्रातः 11 बजे आर्य समाज महावीर नगर, ई–3/1, अरेरा कॉलोनी (10 नं. स्टॉप) भोपाल (म.प्र.) में आयोजित की गई है।

0 शिक्षा समिति संयोजक श्री दलवीरसिंहजी राघव से परामर्श व निर्देशानुसार दिनांक 4/10/2014 शनिवार को सायं 6 बजे प्रान्तीय सभा मुख्यालय आर्य समाज टी. टी. नगर, भोपाल में बैठक आहूत की गई है।

0 समाजों की निरीक्षण समिति की बैठक दिनांक 5/10/2014 रविवार को प्रातः 10 बजे आर्य समाज महावीर नगर, ई–3/1, अरेरा कॉलोनी (10 नं. स्टॉप) भोपाल (म. प्र.) पर आयोजित की गई है। समिति के सदस्य महानुभाव अपने सुझावों के साथ ठीक समय पर पधारने की कृपा करें।

प्रकाश आर्य

सभामन्त्री

॥ ओ३म् ॥
ISO 9001 Company with Export Excellence Award
sabar
साबर पम्पस्
एक नाम भरोसेमंद व लम्बी सेवा के लिये मशहूर
मोटर में EC ग्रेड शुद्ध कापर रोटर का कमाल
POWER SAVINGS GUIDE
50 Feet Pumps
V4 V5 V6
कम वोल्टेज में भी बढ़िया काम देता है।
SSR 503 (0.5 HP Die Cast Body 1440 RPM)
SLM 50 (0.5 HP)
SSM 50 (0.5 HP Speed Master)
विनसब ओपनवेल
3 Phase Horizontal Open Well Set (3 HP to 17.5 HP)
साफ पानी पिये और स्वस्थ रहें....
आपकी सेहत का रखे पूरा ध्यान
ULTRA
RO Water Purifying Systems
RO SYSTEM
40 वर्षों से आपकी सेवा में
जागृति
(राऊ वाले)
कम्पनी द्वारा अधिकृत विक्रेताः
सत्य इण्टरप्राईजेस
हेड ऑफिस : 17, क्षीर सागर, शॉपिंग काम्पलेक्स, उज्जैन फोनः 0734-2556173
ब्रांच ऑफिस : 144, चिमनगंज मण्डी, उज्जैन मोबाईल : 9425930484, 94259-15751

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर